शिक्षा की सामग्री

शिक्षा की सामग्री के अन्तर्गत निम्न लिखित चार घटक आते है :-

(1) - बालक - शिक्षा की सर्वोत्तम तथा सबसे महत्वपूर्ण सामग्री बालक है। प्रत्येक बालक की कुछ जन्मजात शक्तियाँ होती है। उसका शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास इन जन्मजात शक्तियों को ही ध्यान में रखते हुए किया जा सकता है अतः बालक को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए उनकी प्रकृति का ज्ञान होना परम आवश्यक है।

(2) - वंशानुक्रम - शिक्षा की दूसरी घटक वंशानुक्रम है। वंशानुक्रमवादियों का अटल विश्वास है कि शिक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व ही वंशानुक्रम संस्कार बालक के ऊपर अपना प्रभाव डाल चुकते है। इस प्रभाव को मिटाना असम्भव है

(3) - वातावरण - शिक्षा का तीसरा घटक वातावरण है। प्रत्येक बालक का जन्म एक निश्चित स्थान

तथा निश्चित समय पर होता है। उसका पालन पोषण भी एक निश्चित वातावरण में होता है वातावरण दो प्रकार का होता है नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित। बालक के विकास में वातावरण के प्रकारों का प्रभाव अलग-अलग पड़ता है

(4) समय:- बाल विकास में विशिष्ट क्रियाओं का समय निश्चित होता है। अतः बालक के विकास को अच्छी तरह से समझने के लिए विकास की शैशव, बाल्य किशोर तथा प्रौढ़ अवस्थाओं की विशेषताओं का ज्ञान होना परम आवश्यक है, यदि बालक को उसके विकास की अवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए निश्चित समय पर शिक्षा प्रदान की जायेगी तो वह उसे सरलता एवं सफलतापूर्वक ग्रहण करता रहेगा अन्यथा नहीं।

शिक्षा के अंग :- शिक्षा के अंग निम्नलिखित हैं —

(1) शिक्षक :- प्राचीन युग में शिक्षक को मुख्य स्थान प्राप्त था तथा बालक को गौण, वर्तमान युग की शिक्षा में इसका बिल्कुल उल्टा हो गया है। शिक्षक राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग भी है और निर्माता भी।

(2) बालक :- मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों तथा जनतांत्रिक भावनाओं के परिणाम स्वरूप वर्तमान शिक्षा का श्रीगणेश बालक से होता है। अतः कोई भी शिक्षक अपने कार्य में उस समय तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसे बालक के स्वभाव का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान न हो।

(3) पाठ्यक्रम :- शिक्षा की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। यह बालक तथा शिक्षा के बीच कड़ी का काम करता है तथा दोनों की सीमाओं को निश्चित करके शिक्षा की समस्त योजनाओं को शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार संचालित करता है।

शिक्षा के उद्देश्यों का समाज के आदर्शों से सम्बन्ध :- प्रत्येक समाज ने अपने-2 आदर्शों के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों की रचना की है। इसके निम्नलिखित सम्बन्ध है —

(1). आदर्शवादी समाज के सम्बन्ध —

आदर्शवादी दर्शन के अनुसार भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक सत्यों तथा मूल्यों को प्राप्त करना परम आवश्यक है।

(2) भौतिकवादी समाज मे सम्बन्ध :

भौतिक समाज मे भौतिक सम्पन्नता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज मे नैतिक आदर्शों आध्यात्मिक मूल्यों रचनात्मक कार्यों तथा विवेक आदि के विकास पर कोई ध्यान न देते हुए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण केवल भौतिक सुखों की उन्नति के लिए किया जाता है जिससे वह समाज धन्यधान्य से परिपूर्ण हो जाये।

(3) प्रयोजनवादी समाज मे सम्बन्ध — प्रयोजनवादी विचारधारा आदर्शवादी दर्शन के बिल्कुल विपरीत है। प्रयोजनवादी, आदर्शवादियों की भाँति पारलौकिक जीवन को महत्व न देते हुए केवल भौतिक जगत को ही सब कुछ समझते हैं।